

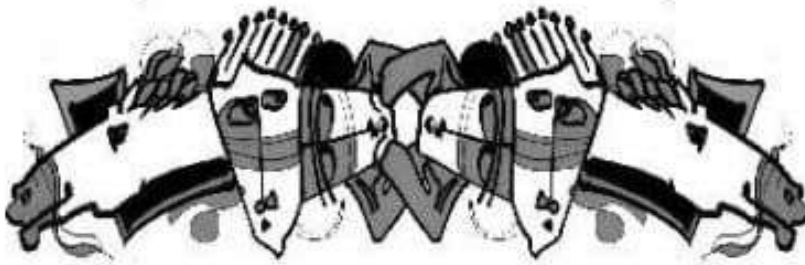
हरिगंधा

साहित्यिक मासिकी

अंक : 341, जनवरी, 2023

प्रायः-प्रायः 2079

हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला



वन्दना यादव



मीडिल मैन

व

ह सर्दियों की रात थी। हाँ, मोबाइल में दिख रहे समय के अनुसार यह वक्रत देर शाम से आगे बढ़ कर पहले पहर की रात में ढल चुका था। मैं घर पहुँचने की बेंचनी में बार-बार समय देख रही थी। पन्द्रह मिनट

पहले घड़ी में दस बजने के बाद समय अब भी लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। महानगर की रोशिनियों में देर रात तक दिन का भ्रम बना रहता है। लोगों की भीड़ में अलग-अलग तरह की आवाजों के शोर से कान बौरा जाते हैं और उजाले में आँखें चौंधियाई रहती हैं मगर रोशनाई से ज़रा सा दूर होते ही डरावने अंधेरे घेरने लगते हैं। उस दिन यह सब इसी स्वरूप में महसूस हुआ। अंधेरा पूरी दहशत के साथ मेरे आस-पास फैल गया था।

डर, रोमांच और प्यार... पहली-पहली बार हर अनुभव नया लगता है। यह पहली बार था कि मुझे लौटने में इतनी देर हुई... इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। अंधेरा घिर आने के बाद बिल्कुल अकेले इस तरह लौटने का वह रिकॉर्ड उस शाम के बाद से आज तक दोबारा नहीं टूटा।

रात साढ़े दस बजे के करीब मैं अपनी नियमित दिनचर्या से तीन की घंटे की देरी से मेट्रो से उतरी। गहराते कोहरे के बीच इक्का-दुक्का सवारियों में अकेली महिला होने के कारण मैं कुछ ज्यादा ही आत्मविश्वास दिखा रही थी। मेरे आगे-पीछे वाले मेट्रो के किसी कोच से एक बेफिक्र सा युवा उतरा और मेरे निकट पहुँच कर लिफ्ट के ऊपर आने का इंतज़ार करने लगा। ठंड से ठिठुरते कुछ ओर लोग भी आ जुटे और देखते ही देखते हम सब यंत्रवत एक के बाद एक सभी चरण पार करते हुए मेट्रो स्टेशन के

बाहर पहुँच गए। कुछ सवारियों ने पार्किंग में खड़ी अपनी दो या चार पहिया वाहनों का रुख कर लिया था दो-चार लोगों को घर ले जाने के लिए उनकी व्यक्तिगत गाड़ी इंतज़ार करती हुई मिली और मेरे जैसे सार्वजनिक परिवहन पर आश्रित लोग किसी भी परिवहन के पहुँचने का इंतज़ार करने लगे। लगातार बढ़ती धुंध में दृश्यता जीरो से कुछ डेसीमल ऊपर ही रही होगी। कुल मिलाकर मंज़ूर कुछ अलग ही तरह का बन गया था। मेरी उम्र वह थी जिसमें भूतों का डर जाता रहता है अगर कोई डर बचता है तो वह है भूतों से अधिक भयानक इंसानी प्रजाति, जो फिलहाल सिर्फ धरती पर पाई जाती है और उसमें से भी खास तौर पर पुरुष। यही सही है कि वहाँ बिल्कुल अकेले खड़े रहने की कल्पना बहुत भयानक होती इसीलिए लोगों की उपस्थिति से मुझे कुछ तसल्ली भी मिल रही थी मगर जितने भी लोग वहाँ थे, उनका पुरुष होना डरा भी रहा था। हाँ, मौसम इस तरह का भी हो सकता था जिसमें गुच्छों में उतरती धुंध बादल बन कर हर शै को अपने घेरे में ले लेने को उतावली थी। पच्चीस-तीस वर्ष पहले यदि इस मौसम में किसी का इंतज़ार कर रही होती तब शायद मैं किसी तरह की रूमानियत भरी खुमारी में डूब जाती मगर उस दिन मुझे सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सता रही थी।

सर्दी की ऐसी मार उसी दिन महसूस हुई थी कि जहाँ ऑटो रिक्शा की भीड़ लगी रहा करती थी, उसी जगह समय से पहले सभी ऑटो चालक अपने-अपने घरों को लौट गए थे। मुझे अपने घर पहुँचने का कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। घर से किसी को मुझे लिवा ले जाने के लिए बुलाने का इंतज़ाम करीब दस वर्ष पहले खत्म हो गया था। इन दिनों घर के दरवाजे

पर लटके ताले के सिवा किसी को मेरे लौटने का इंतजार नहीं रहता... उस दिन इतनी देर हो गई थी कि शायद अब तक दरवाज़े पर लटके उस पीतल के भारी-भरकम द्वारपाल की हृदय गति कई बार रुकी होगी मेरे इंतज़ार में।

मैट्रो स्टेशन के बाहर मौजूद सभी पांच लोगों ने एक-दो बार संशय भरी नज़रों से एक दुसरे को देख लिया था। सभी लाचार से तो दिख रहे थे मगर वे सब अपनी नज़रों से मुझे बेचारी साबित करते हुए महसूस हुए। इसी दौरान वह बेफिक्र सा युवा अचानक मेरे पास आ कर खड़ा हो गया। बिना कुछ बोले, वह मेरे साथ खड़ा रहा। कानों पर मोटे-मोटे हैंडफोन के आकार का ठंडक से बचने का इंतजाम लगाए मन ही मन वह कोई गीत गुनगुना रहा था। गीत जरूर अंग्रेजी ही रहा होगा क्योंकि भूले-भटके जब कभी थोड़ी-बहुत आवाज़ उसके होंठों से निकलती थी तब वह यदा-कदा नू नू नू नू... अं अं अं... के सुर में अलग सी धुन बनाते मेरे कानों तक पहुंच रही थी। वह जो गीत गा रहा था, यह धुन इससे पहले मैंने कभी नहीं सुनी थी।

मैं टैक्सी मंगवाने के बारे में सोच रही थी परन्तु पुराना अनुभव याद आ रहा था जब दिन के उजाले में मैंने टैक्सी के पहुंचने में कई बार पैतालिस मिनट से अधिक का समय इंतज़ार किया था फिर वह तो गहरे अंधेरे का वक्त था। अन्य कोई इंतज़ाम होता ना देख कर इस बार मैंने टैक्सी मंगवाने के लिए पर्स से फोन निकाला ही था कि उसी समय दूर से एक ऑटो रिक्शा की आवाज़ अपनी ओर आती सुनाई दी और कुछ ही पलों में कोहरे के बीच से एक मद्धम से जलते बल्ब को अपनी ओर आते हुए पाया।

ऑटो ठीक से रुका भी नहीं था कि छः लोगों के बैठने वाली सवारी में कुल पाँच लोग मौजूद होने के बावजूद सब इस तरह दौड़ कर चढ़े मानो कुछ पलों की देरी होने पर बैठने की जगह ख़त्म हो जाएगी। मैं धक्का-मुक्की से बचने के लिए पीछे रुक गई। अब ऑटो रिक्शा ठीक से रुक गया था जैसे ही मैं उसमें बैठने लगी, 'प्लीज सिट' उस बेफिक्र से युवा ने अपने साथ वाली सीट पर हाथ के इशारे से मुझे अपने साथ सीट पर जगह देते हुए कहा।

जो शहर पिछले पैंतीस वर्षों से मेरा स्थाई निवास स्थान है, ऑटो रिक्शा में मेरे साथ सवार वहाँ के अन्य निवासी मोबाइल से जुड़े इयरफोन से लैस थे। एक किसी से बात कर रहा था बाकी दो लोग यू-ट्यूब का व्यापार बढ़ा रहे थे। मैं जाहिर तौर

पर अपनी सुरक्षा को ले कर कुछ ज्यादा ही चौकन्नी थी इसीलिए इयरफोन लगाए रखने का ख़तरा मोल नहीं ले सकती थी जबकि मेरे साथ बैठा युवा मोबाइल की दुनिया से भी बेफिक्र ही लगा। वह अपनी धुन में मस्त लगातार कुछ गुनगुना रहा था।

दिल्ली की ठंड के मुकाबले उसके कपड़े साधारण थे। सर्दियों की शुरुआत में पहनी जाने वाली पतली सी स्वेटर जिसमें हाथों को ठंडक से बचाने के लिए जैकेट के समान कोई जेब नहीं थी। कंधों पर पीछे की ओर लटकाए जाने वाले बैग को उसने छोटी सी बैठने की जगह पर सुविधा के हिसाब से गोद में रख लिया था। नई बसावट वाले उपनगर की टूटी-फूटी, उबड़-खाबड़ सड़क पर कूद-कूद कर मंजिल की ओर बढ़ते बैटरी रिक्शा में वह जो भी गुनगुना रहा था, उसके सुर भी रिक्शा की गड़गड़ की आवाज़ और धक्कों के उतार-चढ़ाव के साथ कदमताल कर रहे थे। ठंड को पूरी तरह से अनदेखा करने के लिए उसने अपने पूरे वजूद पर संगीत ओढ़ लिया था।

समय से घर लौट गई होती तो मेरे कपड़े दिन के मौसम की मार के लिए प्रयाप्त थे मगर इस समय मैंने अपनी मंहगे दुपट्टे पर की गई इस्त्री की चिंता भुला कर उसे कानों और सर पर ठंडक से बचने के लिए कस कर लपेट लिया। दिन में जो रास्ता ठीक-ठाक सा लगता था, कोहरे में लिपटी रात में वही रास्ता बहुत लंबा हो गया था। उस समय तक दो सवारियाँ अपनी-अपनी मंजिल पर उतर गई थीं और इस बार मेरा घर आने वाला था मगर वयस्क तावाली उम्र पार कर चुके तीसरे आदमी को अपने साथ बैठी महिला सवारी की सुरक्षा से ज्यादा अपने घर पहुंचने की जल्दी थी। हादसा हो जाने पर कैंडल मार्च निकलने के आदी शहरवासी को साथ बैठी महिला सवारी की सुरक्षा या सुविधा से कोई लेना-देना नहीं था। ऑटो चालक को उसने जो कारण बताया, उसके बाद मेरा चुप हो जाना ही एकमात्र विकल्प था। सीवर लाइन डालने के लिए खोद कर छोड़ दी गई सड़क पर लड़खड़ाता हुआ ऑटो रिक्शा मेरे घर से विपरीत दिशा में दौड़ पड़ा। मेरी विवशता देख कर उस बेफिक्र से युवा की आँखों में फिक्र के बादल उमड़ आए।

'मैंम अ...आ... आपको एड्रेस पर ड्रॉप करके मे घर जाएंगे।' अनायास ही उसने कहा।

'मैं अपने आप चली जाऊंगी। आप अपना एड्रेस बता दो, जिसका घर पहले आएगा रिक्शा उधर ही पहले जाएगा।'

'मैंम आप मेरा मम्मा जैसा हूँ। मैं ऐसा रात में मेरी मम्मा को अ... अ... अकेला नहीं छोड़ेंगे।' इस बार मैंने उसके चेहरे



को गौर से देखा, वह भारतीय नहीं था।

‘तुम कहाँ से हो?’ जिज्ञासा होना स्वाभाविक था।

‘म्यांमार से मैम।’ उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

‘यहाँ कैसे आए?’

‘काम से मैम।’ उसके बोलने के तरीके से लगा कि वह कहना चाहता था, मेरी उम्र से अंदाज़ लगा लो, यह काम करने की उम्र है, वही करने आया हूँ।

‘क्या करते हो?’

‘अ... अ... अभी काम सीख रहा है।’ सड़क पर आती-जाती स्ट्रीट लाइट की रोशनी में मैंने उसकी आँखें देखीं, छोटी-छोटी सी मगर जिंदगी से लबरेज़ आँखें।

‘मेरा अ...अ...अंकल एडमिट हे यहाँ के ह...ह...हॉस्पिटल में।’ उसने बताया।

‘क्या हुआ उन्हें?’

‘ह... ह...हार्ट का प्रोब्लम हे मैम। सर्जरी करना हे। ट्रांसप्लांट... यस... यस... ट्रांसप्लांट करेगा दोक्टर।’ उसे सही शब्द समझाना आ गया था इस बात की खुशी उसकी आवाज़ से होती हुई मुझ तक पहुंच रही थी।

‘कौन से हॉस्पिटल में हैं?’ उसने जो नाम बताया उसे सुनकर मेरी उत्सुकता बढ़ गई। मेरे सवाल के जवाब में उसने वही नाम दोहरा दिया जो पहले बताया था।

‘तुम म्यांमार से सीधे यहीं कैसे पहुंचे?’ इंटरनेट पर सर्च किया था इस हॉस्पिटल के बारे में या किसी ने यहाँ भेजा है?’

‘यस मैम, मेरा कंट्री से सब इंडिया अ...अ...आते हैं इलाज के लिए।’

‘क्या तुम्हें मैडीकल टूरिज़्म के बारे में मालूम है?’

‘यस।’ उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया।

‘तुम्हें पक्का पता है ना कि तुम्हारे अंकल को इसी इलाज़ की ज़रूरत है कहीं दोनों देशों के लोग मिलकर तुम्हें बेवकूफ ना बना रहे हों।’

‘अ...अ...अमारे कंट्री में पहले चेक करवाते हे। वो रेफर करता हे तब इंडिया अ...अ...आते हे।’ उसने अपनी ओर से स्थिति की पूरी तस्वीर खींच दी। बैट्री रिकशा इस समय भी मेरे घर की विपरीत दिशा में दौड़ रहा था।

‘मैम, अ...अ...आप कोई जॉब करते हे?’ यह पूछते हुए उसकी आवाज़ में मुझे झिझक जैसा कुछ नहीं लगा।

‘क्यों?’ महानगरीय लोगों में सामान्यतः दो आदतें पाई जाती हैं। पहली, सामने घटित हो रही घटना को नज़र अंदाज़ कर देना और दूसरी, सवाल के बदले में सवाल पूछना। अब मैं भी महानगर हो गई हूँ सो बिना जांच पड़ताल किए, कुछ भी कैसे बता देती! ‘अ...अ...आपको पहले नहीं देका। मे आते रहते हे, इसी टाईम पर अ...अ...आता हे मे कई बार।’ उसने घड़ी देख कर बताया।

‘तुम कब से हो यहाँ?’ हमारी सवाल करने की आदत सामने वाले की जड़ों तक पहुंचे बिना रूकती नहीं।

‘छे महीना से।’

‘सर्जरी हो गई तुम्हारे अंकल की?’

‘हो गए।’

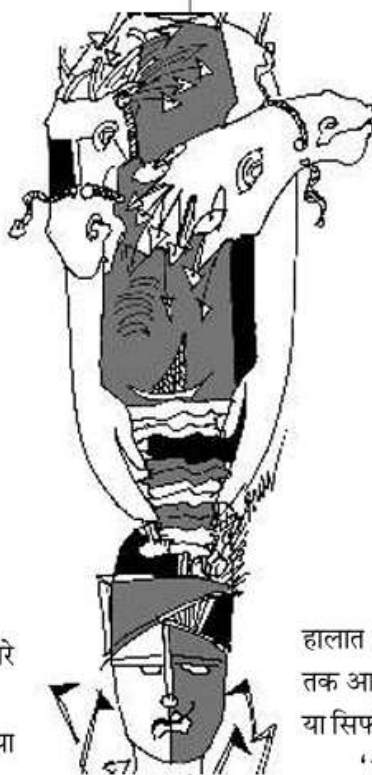
‘तुम वापस कब जाओगे?’ बुजुर्गियत के पायदान पर पहुंच चुके आँटो की हमारी साथी सवारी को उनके पते पर छोड़ कर इस बारक रोहरेम रैस्तेक आंदाजल गातेहुए आँटो मेरे घर के लिए चल पड़ा। कोहरे का आलम यह था कि अब एक फुट की दूरी तक देखना भी असंभव हो गया था। टूटी सड़कों का जंजाल ना होता तो उस दिन मैं बादलों में विचरण करने का आनंद उठा लेती मगर अफसोस कि भयंकर ठंडक झेलने के बावजूद मुझे वह सुख नहीं मिला जो हिन्दी फिल्मों में नायिका को बादलों में उड़ने जैसा महसूस करवा देता है। धुंध और धरातल के हालात से सामंजस्य बैठते हुए हमारी सवारी कुछ दूर तक आ गई थी कि इसी बीच मैंने पूछा, ‘दिल्ली घूमे तुम या सिर्फ पूरा समय हॉस्पिटल में ही रहते हो?’

‘देका हे मैम। ख...ख...खाना भी खाया यहाँ का।’ उसने खुश होते हुए कहा।

‘अच्छ! तुम्हें खाने में सबसे अच्छा क्या लगा?’

‘मैम अ...अ...आपके दिल्ली का ब...ब...बटर नान और प...प...पनीर टू मच अच्छा हे पर उसे टू मच का (खा) नहीं सकता।’ बताते-बताते वह हंसने लगा और तब तक हंसता रहा जब तक उसके मुंह में पानी नहीं आ गया। कुछ पल रुक कर उसने कहा, ‘मेरा एक ओर अंकल का सर्जरी होने हे। ये लोग रिटर्न जा रहे हे, मैं यहीं रहेगा।’

‘... ये लोग तुम्हारे अंकल हैं या तुम यही बिजनेस करते हो?’ इस बार का वार, लुहार के उस हथौड़े वाला था जो सही तापमान पर गर्म हो चुके लोहे पर पड़ता है।



‘ये अ...अ...अंकल हे पर अब में यही रहेगा और काम सीकेगा।’

‘क्या काम सीखने वाले हो?’ मैंने पूछा।

‘मिडिल मैं! में मिडिल मैं बनेगा।’ उसने पूरे यकीन के साथ कहा।

‘यह मीडिल मैं क्या होता है?’ उस के कहे शब्दों को उसी अंदाज़ में बोलते हुए मैं मन ही मन मुस्कुरा रही थी। वैसे तो हर शब्द को बोलने का उसका खास अंदाज़ था मगर मीडिल मैं शब्द जिस आत्मविश्वास से वह कह रहा था, मेरे शब्द भंडार में उसने नया शब्द जोड़ दिया था।

‘देको अ...अ...अमरे मीडिल मैं और अ...अ...आपके देश वाले मीडिल मैं ने अ...अ...अमको ऑप्शन दिया कि इस ट्रीटमेंट के लिए इंडिया के कौन से ह...ह...हॉस्पिटल में इलाज करवाना है। एक्कूली बताया कि ये वाले हॉस्पिटल ठीक हे, तो अ...अ...अम यहां आया।’ उसने समझाया।

‘इसमें तुम क्या सीखोगे?’ हम महानगरीय प्रजाति के लोग मुद्दे की बात जानने को हमेशा उत्सुक रहते हैं, उस समय मैं भी वही कर रही थी।

‘मैम, मेरे कंट्री का मैं सब कुछ जानते है। यहां रह कर अ...अ...आपके देश का सीक रहा हे। थोड़ा टाईम में देकना मैम, में सब सीक जाएगा... खूब रूपीज़ कमाएगा मैम। में रूपीज़ कमाना चाहते हे, खूब सारे रूपीज़। बैंक होम, फेमली को भेजेगा वो सारे रूपीज़।’ अब तक उसके बोलने का अंदाज़ और शब्दों को नया स्वरूप देना मुझे मुस्कुराने पर बाध्य कर रहे थे मगर इस बार जो उसने कहा उसे सुनकर मैं सोच में पड़ गई।

‘कितने लोगों का इलाज करवाओगे तुम?’

‘मैम मरना कोन चाहते हे? सब जानते हे कि मरना हे फिर भी मरना नही चाहते।’ इतना कह कर वह ठट्ठा कर हंसा और देर तक हंसता रहा।

‘मैम ओल्ड मैं भी लोन पर रूपीज़ ले कर इलाज करवाने दौड़ते हे... कहीं भी दौड़ते हे... अ...अ...अमारा लोग इंडिया आते हे। में लाएगा उनको इंडिया। में मिडिल मैं बनेगा...। अ...अ...आप जानते हे मीडिल मैं क्या होते हे?’

‘नहीं, तुम बताओ।’ मैडीकल टूरिज्म के बारे मेरी जानकारी ठीक-ठाक थी इसके बावजूद मैं उसके मुंह से सुनना चाहती थी।

‘मिडिल मैं का मीनिंग हे मेडीकल डीलर, में वही बनेगा।’ उसने कहा।

‘तुम्हारी फेमिली में कौन-कौन हैं, रूपए किसे भेजोगे?’

‘मेरे पेरेंट्स हे मैम। अ...अ...अमारा फार्मिंग का लैंड है जैसे आपके देश में खेती अ...अ...ओता हे, वहां भी आते है।’

‘बस...बस रिक्शा रोको, यही है मेरा घर।’ बातचीत में धुंआ-धुंआ सा माहौल कब पार हुआ, ख़बर ही नहीं हुई।

‘मैम प्रॉब्लम नई हे तो अ...अ... अपना नंबर शेयर करेगे?’ शहरी संस्कृति बेदिल नहीं होती। जो अपना घर रास्ते में पीछे छोड़ कर अकेली महिला को घर तक छोड़ने आए, उससे नंबर शेयर ना करें, यह नहीं हो सकता था।

मैं कुछ दिन थोड़ी सतर्क रही कि शायद वह बेवजह संदेश भेजेगा या फोन करेगा मगर ऐसा नहीं हुआ। कभी-कभार वह मेरे व्हाट्सअप स्टेटस जरूर देखने आता था मगर मैं हिन्दी भाषा की दीवानी, उसे कुछ हासिल नहीं हुआ होगा। धीरे-धीरे यह किस्सा मेरी याददाश्त में रहा मगर जीवन से खत्म हो गया।

इसी बीच कोरोना के कारण बने जटिल हालात में जब जीवन घरों में कैद हो कर रह गया है, पलायन की लंबी प्रक्रिया और बदलते सामाजिक हालात के बीच एक अंतरराष्ट्रीय अनजान नंबर से मुझे व्हाट्सअप संदेश मिला।

‘मैम में कॉल कर रहा हूं, आप प्लीज फोन उठाएं।’ संदेश करने वाले की तस्वीर पहचानी सी लगी परन्तु नाम याद नहीं आ रहा था।

‘हैलो मैम, मैं अली बोल रहा हे म्यांमार से।’ बस इतना ही परिचय चाहिए था। मुझे सर्द रात में फरिश्ते सा वह युवा याद आ गया।

‘हैलो अली, कहां हो आजकल?’

‘मैम, मेरा मदर एक्सपायर हो गया था तब मैं अ...अ...अपने घर आया था फिर यह सब हो गया, फ्लाइंट बंद हो गया। अब मेरे फादर भी नही रहा मैम...’

‘ओह, जानकर बहुत दुख हुआ बेटा।’ इस बार यह जानबूझकर नहीं हुआ था। बेटा संबोधन अंतर्मन से निकला था।

‘मैम जल्दी ये सब ठीक होने वाला है। फ्लाइंट शुरू होते ही मे इंडिया आ जाऊंगा। अब उतने पैसे की जरूरत नहीं है। यहाँ कोई नहीं बचा मेरा, अब सिर्फ अपने लिए कमाऊंगा। मैम, विंटर से पहले सब ठीक हो जाएगा, में अ...अ...आ रहा है मैम। मेरा मम्मा नहीं रहा... मे एक बार अ...अ...आपसे मिलना चाहता है, आ जाऊं मैम?’

‘हाँ बेटा, हालात ठीक हो जाते हैं तब आना।’

बात खत्म हो गई थी। मोबाइल मैंने हाथ में पकड़ रखा था। बरसात के मौसम की आर्द्रता में जब पहने हुए कपड़े शरीर की नमी से गीले हो कर त्वचा पर चिपक जाते हैं, उसी मौसम में अचानक से मुझे बादलों के गुच्छों ने आ घेरा। चिपचिपा मौसम एकाएक बदल गया... हर ओर ठंडी हवा बहने लगी।

सम्पर्क : 8800606550